ज़िंदगी और शायरी

• आलोक सेठी

आलोक सेठी का शब्द संसार

ज़िंदगी के लिए
आलोक का फंडा
द्वितीय संस्करण

अनमोल संदेशों
की महक
(द्वितीय संस्करण)

रोज़मर्रा से जुड़ी
महत्वपूर्ण बातें

बिखरते संबंधों को
जोड़ने का एक प्रयास

विश्व पर्यटन
का रोचक दस्तावेज़

रिश्तों की पड़ताल
करती ऑडियो बुक

प्रेरक लघु कथाएँ
(संवर्धित द्वितीय संस्करण)

माँ की महिमा
का अनूठा ग्रंथ

हिन्दी कविताओं
का ताना बाना

भावपूर्ण कविताओं
की यात्रा

पिता के भावलोक
की शब्द यात्रा

ज़िन्दगी और शायरी

प्रथम संस्करण : 2019

क़ीमत : ` **200/-**

लेखक : **आलोक सेठी**
हिन्दुस्तान अभिकरण, पंधाना रोड, खण्डवा (म.प्र.)
Tel : 0733-2223003, 2223004
Cell : 094248-50000
Email : hindustanabhikaran@yahoo.co.in
Website : www.aloksethi.in

प्रकाशक : **शब्दावली प्रकाशन**
गोडाउन नं. 2, अग्रवाल तौल कांटा कम्पाउण्ड
लसुड़िया मोरी, देवास नाका, ए.बी. रोड, इन्दौर
Cell: 70240-50000

मुद्रक : **भैया प्रिन्टर्स,** इन्दौर (म.प्र.)
Tel: 0731-2421170

सजावट : **संजय पटेल :** 97525-26881

Zindagi Aur Shayri
Compilation of Urdu / Hindi Poetry by Alok Sethi

ISBN-B-978-81-934849-0-6

समर्पित

बेटी बनकर
अपने स्नेह की
फुहार करने वाली
दोनों बहूरानियों...
श्वेता एवं सलोनी
को

दुनिया का उजाला है शायरी

दुनिया में जितने भी परफ़ार्मिंग आर्ट हैं उसमें शे'र-ओ-शायरी अव्वल नंबर पर है। वजह यह है कि ग़ज़ल, शे'र, कविता या गीत उसके लिखने वाले से ज़्यादा सुनने और पढ़ने वालों की अमानत हो जाते हैं। शायरी की परवाज़ और लोकप्रियता की वजह उसे पसंद करने वालों की मुहब्बत है। मैंने कोई पचास बरस उर्दू मंच पर गुज़ारे हैं। इस दौरान तमाम बुराईयों के बावजूद यदि दुनिया भली-भली बनी हुई है तो उसकी एक वजह इंसान के पास शायरी का आसरा होना है। जो कविता या शायरी साम्प्रदायिकता के ज़रिए समाज को बाँटने की बात करती है उसे अदब या साहित्य का हिस्सा नहीं माना जाना चाहिए।

अज़ीज़ आलोक सेठी एक क़ामयाब कारोबारी होने के साथ एक अच्छे कवि और दानिशवर भी हैं। उनसे जब भी मिलना हुआ है - ख़ुशी मिली है। बीते कई बरसों से वे रोशन ख़याल किताबें लेकर हाज़िर होते रहे हैं। इस बार वे 'ज़िंदगी और शायरी' उन्वान से ये मजमुआ लेकर आए हैं जिसमें कई नामचीन शोअरा के ख़ूबसूरत अशआर शामिल हैं। मैं भाई आलोक को इस काम के लिए मुबारकबाद देता हूँ। वे शब्दों का सफ़र जारी रखें क्योंकि ऐसी कोशिशों से ही दुनिया में उजाला बना रहेगा, मुहब्बतें क़ायम रहेंगी और हम सब बेहतर इन्सान बनने की कोशिश करते रहेंगे।

डॉ. राहत इन्दौरी

अपनी बात

कम शब्दों में अगर बड़ी बात कहना हो तो शायरी से बेहतरीन कुछ नही। शायद हमारे शायरों को सदियों पहले ही अहसास हो गया था कि आने वाला युग शब्द और समय की कमी से जूझेगा, ज़माना ट्वीट का आएगा, इसीलिए वे दो लाइनों में ज़िंदगी के फण्डे कहते चले गए।

शायरी नाचीज़ की ज़िंदगी का अहम हिस्सा है। जिस तरह बच्चे खिलौने या महिलाएँ गहनों से प्यार करती हैं, सार-संभाल करती हैं, उसी तरह मुझे जहाँ भी कोई बेहतर शे'र पढ़ने या सुनने में आया; वह मेरे ज़ेहन और डायरी का हिस्सा बन जाता है। उन्हीं बेहतर में से कुछ बेहतरीन अशआर आपकी नज़र हैं। मेरा प्रयास रहा है कि सकारात्मक और हौसला बढ़ाने वाले शे'र ही इस प्रकाशन में शामिल किए जाएँ।

आसमान से चमकते अनगिनत सितारों में से दो-चार सौ का चयन एक मुश्किल काम था। अनेक बेहतरीन शे'र न चाहते हुए भी छूट गए हैं; उन पर एक और किताब जल्द ले आएँगे। जिन शायरों के नाम छूट गए हैं या ग़लत प्रकाशित हुए हैं उन्हें ध्यान में लाने की गुज़ारिश है जिससे उन्हें अगले एडीशन में ठीक किया जा सके।

मेरे प्रकाशनों की सजावट में हमेशा की तरह भाई संजय पटेल और उनकी टीम एडराग का प्रेम यथावत है, उनका दिल से आभार।

दुआओं के साथ...

आलोक सेठी

वो कौन है दुनिया में जिसे ग़म नहीं होता
किस घर में ख़ुशी होती है मातम नहीं होता
क्या सुरमा भरी आँखों से आँसू नहीं गिरते
क्या मेहंदी लगे हाथों से मातम नहीं होता

-वसीम बरेलवी

कौन सी बात कहाँ कैसे कही जाती है
ये सलीक़ा हो तो हर बात सुनी जाती है

-वसीम बरेवली

सितारे तोड़ने की मेरी ख़्वाहिश तुमसे पूरी हो
दुआ है तुम सभी क़द से मेरे ऊँचे निकल जाओ

-मुज़फ़्फ़र हनफ़ी

उसूलों पर जहाँ आँच आए टकराना ज़रूरी है
जो ज़िंदा हो तो फिर ज़िंदा नज़र आना ज़रूरी है
नई उम्रों की खुद मुख़्तारियाँ को कौन समझाए
कहाँ से बच के चलना है कहाँ जाना ज़रूरी है

-वसीम बरेलवी

चारों ओर खड़े हैं दुश्मन बीचों-बीच अकेला मैं
जबसे मुझको ख़ुशफ़हमी है, सब घटिया हैं - बढ़िया मैं

न कर शुमार कि हर शै गिनी नहीं जाती
ये ज़िंदगी है हिसाबों से जी नहीं जाती

-फ़ज़ल ताबिश

लोगों के दिलों और दुआओं में मिलेगा
वो शख़्स कहाँ तुमको गुफ़ाओं में मिलेगा
ठहरे हुए मौसम में कहाँ उसका ठिकाना
शाहीन है वो तो तेज़ हवाओं में मिलेगा

ये अलग बात कि ख़ामोश खड़े रहते हैं
फिर भी जो लोग बड़े हैं वो बड़े रहते हैं
-राहत इंदौरी

जब तक बिका न था तो कोई पूछता न था
तुमने मुझे ख़रीद कर अनमोल कर दिया

गुलाबों की तरह दिल अपना शबनम में भिगोते हैं
मुहब्बत करने वाले ख़ूबसूरत लोग होते हैं
यही अंदाज़ है मेरा समंदर फतह करने का
मेरी काग़ज़ की कश्ती में कई जुगनू भी होते हैं

-बशीर बद्र

तनकर खड़ा रहा तो ज़मीं से उखड़ गया
वाक़िफ़ नहीं था पेड़ हवा के मिज़ाज से

कायरता जिन चेहरों का सिंगार करती है
मक्खियाँ भी उन चेहरों पर बैठने से इंकार करती हैं

-माणिक वर्मा

निर्वाण घर में बैठ कर होता नहीं कभी
बुद्ध की तरह मुझे कोई घर से निकाल दे
पीछे बंधे है हाथ मगर शर्त है सफर
किससे कहूँ कि पाँव से काँटा निकाल दे
-ताज भोपाली

उबरने ही नहीं देती है ये बेईमानियाँ दिल की
वग़रना कौन क़तरा है जो दरिया बन नहीं सकता
-शहीद भगतसिंह

दिले नाउम्मीद तो नहीं नाकाम ही तो है
लंबी है ग़म की शाम मगर शाम ही तो है
-फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

तलब की राह में पाने से पहले खोना पड़ता है
बड़े सौदे नज़र में हों तो छोटा होना पड़ता है

ज़ुबाँ देता है जो आँसू तुम्हारी बेज़ुबानी को
उसी आँसू को फिर आँखो से बाहर होना पड़ता है

मुहब्बत ज़िंदगी के फ़ैसलों से लड़ नहीं सकती
किसी को खोना पड़ता है किसी का होना पड़ता है

-वसीम बरेलवी

दिल ऐसा कि सीधे किए जूते भी बड़ों के
ज़िद इतनी कि ख़ुद ताज उठाकर नहीं पहना

-मुनव्वर राना

दुश्मनी जमकर करो, लेकिन ये गुंजाइश रहे
जब कभी हम दोस्त हो जाएँ तो शर्मिन्दा न हों

-बशीर बद्र

ज़रा सा क़तरा कहीं आज गर उभरता है
समुंदरों के ही लहजे में बात करता है
खुली छतों के दीये कब से बुझ गए होते
कोई तो है जो हवाओं के पर कतरता है
ज़मीं की कैसी वक़ालत हो कुछ नहीं चलती
गर आसमाँ से कोई फ़ैसला उतरता है

-वसीम बरेलवी

जिस क़ौम को मिटने का एहसास नहीं होता
उस क़ौम का दुनिया में इतिहास नहीं होता

क़िस्मत में जो लिखा वो मिल जाएगा आक़ा
वो दीजिये जो मेरे मुक़द्दर में नहीं है

तू किसी और से न हारेगा
तुझको तेरा ग़ुरूर मारेगा

तुझको दस्तार जिसने बख़्शी है
तेरा सर भी वो ही उतारेगा

इक ज़रा और इंतज़ार करो
सब्र जीतेगा ज़ुल्म हारेगा

-नईम अख़्तर ख़ादमी

कह दो ये समंदर से हम ओस के मोती हैं
दरिया की तरह तुझसे मिलने नहीं आएँगे

-बशीर बद्र

ज़लज़ले ऊँची इमारत को गिरा सकते हैं
मैं तो बुनियाद हूँ मुझको तो कोई ख़ौफ़ नहीं

दरिया को ज़ोम था कि मैं धारे पे आ गया
लेकिन मैं उससे बच के किनारे पे आ गया
मुझको बुलाने वालों की उम्रें निकल गई
लेकिन मैं तेरे एक इशारे पे आ गया

-मुनव्वर राना

शोहरत की बुलंदी भी पल भर का तमाशा है
जिस शाख़ पर बैठे हो वो टूट भी सकती है

-बशीर बद्र

यही है राज़ मेरी क़ामयाबी का ज़माने में
मैं साहिल पर होकर भी नज़र रखता हूँ तूफाँ पर

पीली शाख़ें सूखे पत्ते, ख़ुशरंग शजर बन जाते हैं
जब उसकी नवाज़िश होती है, सब ऐब हुनर बन जाते हैं
चलते हैं सभी एक साथ मगर, मंज़िल पर पहुँचने से पहले
कुछ रहनुमा बन जाते हैं, कुछ गर्दे सफ़र बन जाते हैं

-ताहिर फ़राज़

दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है
मिल जाए तो मिट्टी है खो जाए तो सोना है

-निदा फ़ाज़ली

जितने कष्ट कंटकों में हैं उनका जीवन सुमन खिला
गौरव गंध उन्हें उतना ही यत्र-तत्र-सर्वत्र मिला

-मैथलीशरण गुप्त

तरक़्क़ियों की दौड़ में उसी का ज़ोर चल गया
बना के अपना रास्ता जो भीड़ से निकल गया
कहाँ तो बात कर रहा था खेलने की आग से
ज़रा सी आँच क्या लगी वो मोम सा पिघल गया

-नईम अख़्तर ख़ादमी

आँधियाँ मग़रूर दरख़्तों को पटक जाएँगीं
बस वही शाख़ बचेगी जो लचक जाएगी

-राहत इंदौरी

चाहे गीता बाँचिए या पढ़िये क़ुरआन
तेरा-मेरा प्यार ही हर पुस्तक का ज्ञान

-निदा फ़ाज़ली

जो सफ़र इख़्तियार करते हैं
वही मंज़िल को पार करते हैं
सिर्फ़ चलने का हौसला रखिये
रास्ते इंतज़ार करते हैं

-नवाज़ देवबंदी

दुश्मनी का सफ़र इक क़दम, दो क़दम
तुम भी थक जाओगे हम भी थक जाएँगे

-बशीर बद्र

कश्ती का ज़िम्मेदार फक़त नाख़ुदा नहीं
कश्ती में बैठने का सलीक़ा भी चाहिये

-शफ़ीक़ जौनपुरी

देखो कहीं ये जुगनू दिनमान हो न जाये
ये रास्ते का पत्थर, भगवान हो ना जाये
जो कुछ दिया प्रभु ने अहसान मानता हूँ
बस चाहता यही हूँ, अभिमान हो ना जाये

-सुरेश नीरव

कुछ लोग थे जो वक़्त के साँचे में ढल गए
कुछ लोग हैं जो वक़्त के साँचे बदल गये

-मख़मूर सईदी

चमन में इख़्तिलाफ़े रंग बू से बात बनती है
तुम्हीं तुम हो तो क्या तुम हो, हमीं हम हैं तो क्या हम हैं

-सरशार सैलानी

लगन से काम को अपने जो सुबहो-शाम करते हैं
जिन्हें मंज़िल की ख़्वाहिश है वो कब आराम करते हैं
बहुत कम लोगों को मिलता है यह एज़ाज़ दुनिया में
ख़ुशी होती है जब बच्चे बड़ों का नाम करते हैं
ये छोटी बात है लेकिन तुम्हारे काम आएगी
जो अच्छे लोग होते हैं वो अच्छे काम करते है

-सूफ़ियान क़ाज़ी

मंज़िल मिलेगी ज़रूर, विश्वास ले चलना होगा
हो अमावस की हुक़ूमत तो दीप बनकर जलना होगा

माना कि मेरे पास में ख़ाली गिलास है
लेकिन तसल्ली है कि सुराही के पास है

काम को फ़र्ज़ समझकर जो निभाने लग जाएँ
फिर बुलंदी से बुलावे हमें आने लग जाए
अपनी मेहनत के सबब और रब इनायत के तुफ़ैल
मैं जहाँ पहुँचा हूँ औरों को ज़माने लग जाएँ

-सुफ़ियान क़ाज़ी

सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल ज़िंदगानी फिर कहाँ
और ज़िंदगानी रह गई तो नौजवानी फिर कहाँ

-ख़्वाजा मीर दर्द

टूटी हुई मुंडेर पर, छोटा-सा एक चराग़
मौसम से कह रहा है, आँधी चला के देख

-नसीम निकहत

सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा
इतना मत चाहो उसे वो बेवफा हो जाएगा
हम तो दरिया है हमें अपना हुनर मालूम है
जिस तरफ भी हम बहेंगे रास्ता हो जाएगा

-बशीर बद्र

फ़ैसला होने से पहले मैं भला क्यों हार मानूँ
जग अभी जीता नहीं है, मैं अभी हारा नहीं हूँ

-लालजी पाण्डेय 'अंजान'

झुकते वही जिनमें जान होती है
अकड़े रहना मुर्दो की पहचान होती है

शाम का वक़्त है शाख़ों को हिलाता क्यों है
तू थके-मांदे परिंदों को उड़ाता क्यों हैं
वक़्त को कौन भला रोक सका है पगले
सुइयाँ घड़ियों की तू पीछे घुमाता क्यों है
स्वाद कैसा है पसीने का ये मज़दूर से पूछ
छाँव में बैठ के अंदाज़ लगाता क्यों है

-कृष्णकुमार 'नाज़'

ग़म तो मेरे साथ-साथ बहुत दूर तक गए
ना आई मुझे थकान तो वे ख़ुद ही थक गए

फूल में कितना वज़न है, शूल में कितनी चुभन है
यह बताएँगे तुम्हें वे, ज़िंदगी जिनकी हवन है

जिस दिन से चला हूँ मेरी मंज़िल पर नज़र है
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा
ये फूल मुझे कोई विरासत में मिले हैं
तुमने मेरा काँटो भरा बिस्तर नहीं देखा
-बशीर बद्र

अंधेरे पर क्यों झल्लाएँ,
अच्छा हो एक दीप जलाएँ
-नीरज

इस अंगीठी तक गली से कुछ हवा आने तो दो,
जब तलक खिलते नहीं ये कोयले देंगे धुआँ
-दुष्यंत कुमार

सूरज से कह दो तुम बेशक अपने घर आराम करे
चाँद-सितारे जी भर सोएँ नहीं किसी का काम करें
आँख मूँद लो दीपक तुम भी दिया-सलाई जलो नहीं
अपना सोना, अपनी चाँदी गला-गला कर मलो नहीं
अगर अमावस से लड़ने की ज़िद कोई कर लेता है
एक ज़रा सा जुगनू सारा अंधकार हर लेता है

-बालकवि बैरागी

कंधे से कंधे मिले हुए हैं क़दम-क़दम के साथ है
पेट करोड़ों भरने हैं पर उनसे दुगुने हाथ हैं

ख़ुद अपने उबरने की करता नहीं जो कोशिश
उस डूबने वाले पर हँसता है किनारा भी

-नज़ीर बनारसी

मेरा क्या है फिर एक सूरज उगा लूँगा
उजाले उनको दो जो तरसते हैं उजालों को
मेरी तरक्क़ी पर निगाह थी ज़माने की
पर किसने देखा मेरे पाँव के छालों को

गर देखना चाहते हो तुम मेरी उड़ान को
तो जाओ थोड़ा ऊँचा करो आसमान को

चारों वेदों में बात लिखी हैं दोई
दुख दीने दुख होई सुख दीने सुख होई

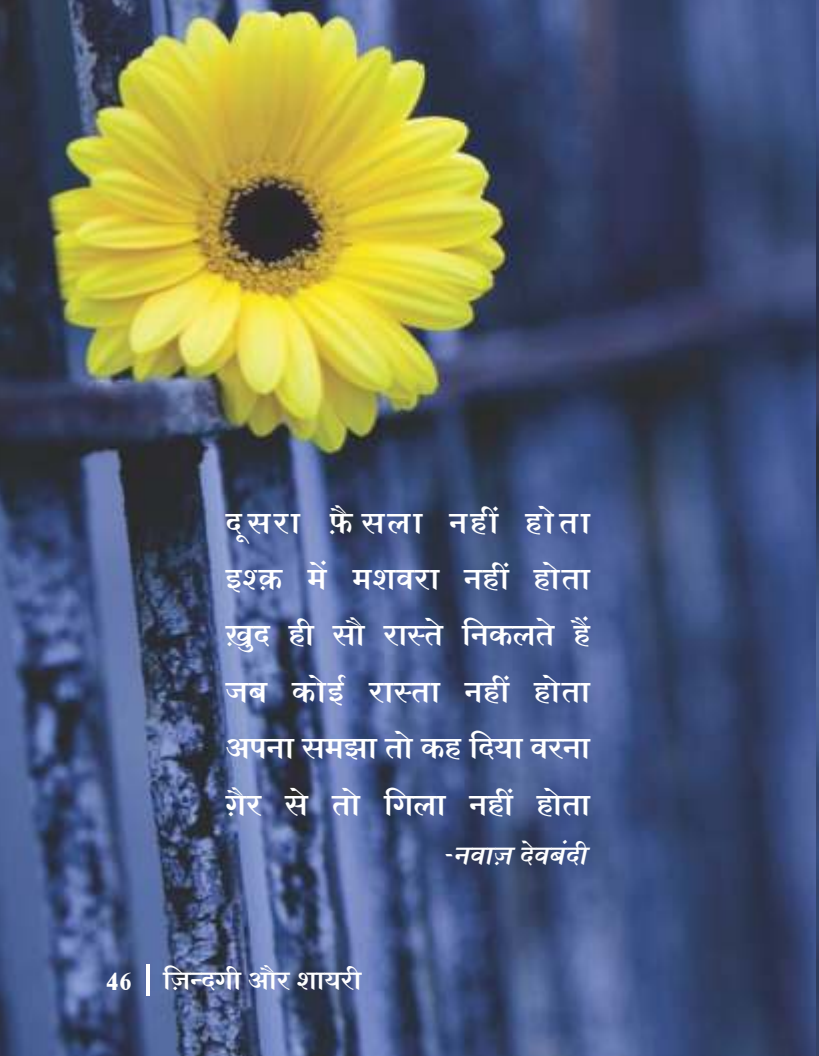

दूसरा फ़ैसला नहीं होता
इश्क़ में मशवरा नहीं होता
ख़ुद ही सौ रास्ते निकलते हैं
जब कोई रास्ता नहीं होता
अपना समझा तो कह दिया वरना
ग़ैर से तो गिला नहीं होता

-नवाज़ देवबंदी

जाओ जाकर किसी मज़लूम के आँसू पोंछो,
फिर कहीं जाके ये समझोगे इबादत क्या है।

जुस्तजू हो तो सफ़र ख़त्म कहाँ होता है
यूँ तो हर मोड़ पर मंज़िल का गुमाँ होता है।

बंद रखते हैं ज़ुबाँ लब नहीं खोला करते
चाँद के सामने तारे नहीं बोला करते
फ़ासला कितना है इस डाली से उस डाली तक
इतना उड़ने के लिये पर नहीं तौला करते

-नईम अख़्तर ख़ादमी

हर आदमी में होते हैं दस-बीस आदमी
जिसको भी देखना हो कई बार देखना

-निदा फ़ाज़ली

जो आलाज़र्फ़ होते हैं हमेशा झुकके मिलते हैं
सुराही सरनिगूँ होकर भरा करती है पैमाने

-हैदर अली आतिश

लोग हर मोड़ पर रूककर संभलते क्यों हैं
इतना डरते हैं तो फिर घर से निकलते क्यों हैं
मैं ना जुगनू हूँ, ना सूरज हूँ, ना कोई तारा
रोशनी वाले मेरे नाम से जलते क्यों हैं

-राहत इंदौरी

थोड़ी आँच बची रहने दो, थोड़ा धुआँ निकलने दो
कल देखोगे कई मुसाफिर इसी बहाने आएँगे

-दुष्यंत कुमार

बरसात में तालाब तो हो जाते है कमज़र्फ़
बाहर कभी आपे से समंदर नहीं होता

-एजाज़ रहमानी

बेरंग ज़िंदगी है तो बेरंग ही सही
हम तो यहीं रहेंगे ज़मीं तंग ही सही
हम अमन चाहते हैं मगर ज़ुल्म के ख़िलाफ़
गर जंग लाज़मी है तो फिर जंग ही सही

-साहिर लुधियानवी

बात हक़ की है तो क़ुबूल करो
ये न देखो कि कौन कहता है

-दिवाकर राही

माना कि इस ज़मीं को न गुलज़ार कर सके
कुछ ख़ार कम तो कर गए गुज़रे जिधर से हम

-साहिर लुधियानवी

यूँ ही बेसबब न फिरा करो, कोई शाम घर भी रहा करो
वह ग़ज़ल की सच्ची किताब है, उसे चुपके-चुपके पढ़ा करो
कोई हाथ भी न मिलाएगा, जो गले मिलोगे तपाक से
ये नये मिज़ाज का शहर है, ज़रा फ़ासले से मिला करो

-बशीर बद्र

जब भी चाहेंगे, ज़माने को बदल डालेंगे
सिर्फ़ कहने को ये बात बड़ी है यारों

-जाँ निसार अख़्तर

तूफ़ानों से आँख मिलाओ, सैलाबों पर वार करो
मल्लाहों का चक्कर छोड़ो, तैर के दरिया पार करो

-राहत इंदौरी

रंजिश रही है दिल में सफ़ाई के बाद भी
बंजर रही ज़मीं भी सिंचाई के बाद भी
तुम गुफ़्तगू करो तो तुम्हें ये पता चले
जाहिल हैं कितने ही लोग पढ़ाई के बाद भी

-उम्मी अहमदाबादी

सातों दिन भगवान के क्या मंगल, क्या पीर
जिस दिन सोये देर तक भूखा रहे फ़क़ीर

-निदा फ़ाज़ली

ओ शहर जाने वाले ये बूढ़े शजर न बेच
मुमकिन है लौटना पड़े गाँव का घर न बेच

-नवाज़ देवबन्दी

न रहा मोहताज मैं चाँद-सितारों का कभी
मैंने मेहनत के सदा अपनी उजाले देखे
तज़किरा उसने लकीरों का वहीं छोड़ दिया
जब नजूमी ने मेरे हाथ के छाले देखे

-उम्मी अहमदाबादी

लोगों ने बढ़ा दी है इधर ज़िम्मेदारियाँ
हम पहले इक चराग़ थे अब आफ़ताब हैं

-कृष्णानंद चौबे

अंजाम उसके हाथ है आगाज़ करके देख
भीगे हुए परों से ही परवाज़ करके देख

-नवाज़ देवबंदी

एक दिन दिनमान से मैंने ज़रा जब यों कहा
आपके साम्राज्य में इतना अंधेरा क्यों रहा
तिलमिलाकर वो दहाड़ा मैं भला अब क्या करूं
तुम निकम्मों के लिये मैं अकेला कहाँ तक बढ़ूँ
आकाश की आराधना के चक्करों में मत पड़ो
संग्राम ये घनघोर है कुछ मैं लड़ूँ कुछ तुम लड़ो

-बालकवि बैरागी

जब अमीरी में मुझे ग़ुर्बत के दिन याद आ गए
कार में बैठा हुआ, पैदल सफ़र करता रहा

-विजेन्द्र सिंह परवाज़

तमाम दिन जो कड़ी धूप में झुलसते हैं
वही दरख़्त मुसाफ़िरों को छाँव देते हैं

-बुद्धिसेन शर्मा

परखना मत, परखने में कोई अपना नहीं रहता
किसी भी आइने में देर तक चेहरा नहीं रहता
बड़े लोगों से मिलने में ज़रा सा फ़ासला रखना
जहाँ दरिया समंदर में मिला, दरिया नहीं रहता

-बशीर बद्र

अपनी तस्वीर बनाओगे तो होगा एहसास
कितना दुश्वार है ख़ुद को कोई चेहरा देना।

-अज़हर इनायती

जंगल में कुएँ ने मेरी प्यास से कहा
पानी जहाँ कहीं भी है गहराईयों में हैं

आप भी आइये हमको भी बुलाते रहिए
दोस्ती जुर्म नहीं दोस्त बनाते रहिए
दुश्मनी लाख सही ख़त्म न कीजे रिश्ता
दिल मिले या न मिले हाथ मिलाते रहिए

-निदा फ़ाज़ली

दूर से देख के कह दूँ वो है
उसके बारे में सुना है इतना

-कैसरूल ज़ाफ़री

उठाकर अपनी रातों का उजाला दे दिया मैंने
हया बरसों की भूखी थी, निवाला दे दिया मैंने

-ज़फ़र गोरखपुरी

यक़ीन हो तो कोई रास्ता निकलता है
हवा की ओट लेकर भी चराग़ जलता है
उम्मीद-ओ-यास की रुत रोज़ आती-जाती है
मगर यक़ीन का मौसम नहीं बदलता है

-मंज़ूर हाशमी

ज़रूरी नहीं कि हर वक़्त जंग का आग़ाज़ कर दो
ग़लती छोटी हो तो, नज़रअंदाज़ कर दो

इल्म की इब्तिदा है हंगामा
इल्म की इंतिहा है ख़ामोशी....

-फ़िरदौस गयावी

कुछ हक़ीक़त का सामना भी कर
ख़ुश-ख़याली के जाल ही मत बुन
आइना देखकर पलट मत जा
हौसला है तो उसकी बात भी सुन

मुझे ऐ रास्तों पल भर ठहरने की इजाज़त दो
कहीं चलते हुए भी पाँव का काँटा निकलता है
-बुद्धिसेन शर्मा

कोई भी कर ना सका उसके क़द का अंदाज़
वो आसमाँ है और सर झुकाए फिरता है
-राहत इंदौरी

नज़र-नज़र में उतरना कमाल होता है
नफ़स-नफ़स में बिखरना कमाल होता है
बुलंदियों पे पहुँचना कोई कमाल नहीं
बुलंदियों पे ठहरना कमाल होता है

-अशोक साहिल

मैं उसे फिर मिलूँगा हँसते हुए,
मुझको आता है ये हुनर अब भी...

-फ़रहत शहज़ाद

जो थे खोटे वो सभी चल निकले,
और तुम हो के खरे बैठो हो...

-अख़लाक़ बन्दवी

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या
पथ में बिखरे यदि शूल ना हो
वह नाविक धैर्य परीक्षा क्या
यदि धाराएँ प्रतिकूल ना हो

-मैथलीशरण गुप्त

न मैं भीड़ हूँ, न मैं शोर हूँ, मैं इसीलिए कोई और हूँ
कई रंग आए-गए मगर, कोई रंग मुझपे चढ़ा नहीं...

-शकील आज़मी

राजमहल भी रश्क़ करें
खंडहर हो तो ऐसा हो...

-हस्तीमल 'हस्ती'

जब्र का ज़हर कुछ भी हो पीता नहीं
मैं ज़माने की शर्तों पे जीता नहीं
देखे जाते नहीं मुझसे हारे हुए
इसलिये मैं कोई जंग जीता नहीं
अपनी सुबह के सूरज उगाता हूँ ख़ुद
मैं चिराग़ों की साँसो से जीता नहीं

-वसीम बरेलवी

सात सन्दूकों में भरकर दफ़्न कर दो नफ़रतें
आज इन्साँ को मुहब्बत की ज़रूरत है बहुत

-बशीर बद्र

तुम सोच रहे हो बस, बादल की उड़ानों तक
मेरी तो निगाहें हैं सूरज के ठिकानों तक

-आलोक श्रीवास्तव

स्याह रात नहीं लेती है नाम ढलने का
यही तो वक़्त है सूरज तेरे निकलने का
कहीं न सबको समंदर बहाके ले जाए
ये खेल ख़त्म करो कश्तियाँ बदलने का
-शहरयार

मंज़िलें क्या हैं, रास्ता क्या है
हौसला हो तो फ़ासला क्या है
-आलोक श्रीवास्तव

फूल की पत्ती से भी कट सकता है हीरे का जिगर
मर्दे-नादाँ पर कलामे-नर्म नाज़ुक बेअसर
-अल्लामा इक़बाल

बहुत मशहूर होता जा रहा हूँ,
मैं ख़ुद से दूर होता जा रहा हूँ
यक़ीनन अब कोई ठोकर लगेगी
मैं अब मग़रूर होता जा रहा हूं

चाहे सोने के फ्रेम से जड़ दो
आइना झूठ बोलता ही नहीं
सच घटे या बढ़े तो सच न रहे
झूठ की कोई इंतिहा ही नहीं

-कृष्ण बिहारी नूर

शर्तें लगाई जाती नहीं दोस्तों के साथ
कीजिए मुझे कूबूल मेरी हर कमी के साथ

-वसीम बरेलवी

होकर मायूस ना यूँ शाम से ढलते रहिए
ज़िंदगी भोर है सूरज से निकलते रहिए
एक ही पाँव पे ठहरोगे तो थक जाओगे
धीमे-धीमे ही सही आप तो चलते रहिये

-कुँअर बेचैन

तजुर्बों में कमी रही होगी
हादसे बेसबब नहीं होते

लीक पर वो चलें
जिनके चरण दुर्बल और हारे हैं
मुझे तो अपनी यात्रा से जो बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे है

-सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

अगर ज़िंदगी है तो ख़्वाब हैं
ख़्वाब है तो मंज़िलें हैं
मंज़िलें हैं तो रास्ते हैं
रास्ते हैं तो मुश्किलें हैं
मुश्किलें हैं तो हौसले हैं
हौसले हैं तो विश्वास है
...कि जीत हमारी है

-जावेद अख़्तर

वो मंज़िलों पे यक़ीनन पहुँच नहीं सकते
जो सोचते हैं बहुत रास्तों के बारे में

-अतुल अजनबी

है वही सूरमा इस ज़माने में, जो अपनी राह बनाते हैं
कुछ चलते हैं परचिह्नों पर, कुछ पदचिह्न बनाते हैं

ग़मों की आँच पे आँसू उबालकर देखो
बनेंगे रंग किसी पर तो डालकर देखो
तुम्हारे दिल की चुभन भी ज़रूर कम होगी
किसी के पाँव से काँटा निकालकर देखो

-कुँअर बेचैन

मैं चुप रहा तो और ग़लतफ़हमियाँ बढ़ीं
वो भी सुना है उसने जो मैंने कहा नहीं

-बशीर बद्र

बलाएँ राह को रोकेंगी क्या भला उसको
जो अपनी आँख में मंज़िल बसाए रहता है

-अतुल अजनबी

चाँद सूरज के जो हों ख़ुद मोहताज
उनसे न भीख लो उजालों की
बंद आँखों से ऐसा काम करो
आँख खुल जाएँ आँख वालों की

आँखों में लग जाए तो, नाहक निकले ख़ून
बेहतर है छोटे रखें, रिश्तों के नाख़ून
-आलोक श्रीवास्तव

ऐसी-वैसी बातों से तो ख़ामोशी ही अच्छी है
या फिर ऐसी बात करें जो ख़ामोशी से अच्छी हो

जलते घर को देखने वालों, फूस का छप्पर आपका है
आपके पीछे तेज़ हवा है, आगे मुक़द्दर आपका है
उसके क़त्ल पे मैं भी चुप था, मेरा नम्बर अब आया
मेरे क़त्ल पे आप भी चुप हैं, अगला नम्बर आपका है

-नवाज़ देवबन्दी

जमा कर अपने पैरों को चुनौती देनी पड़ती है
कोई बैसाखियों के दम पर अंगद हो नहीं सकता

बातों के अब फूल खिलाओ, बात करो
बातों से आलम महकाओ, बात करो

-सतलज राहत

मैं क़तरा होकर समंदर से जंग लेता हूँ
मुझे बचाना समंदर की ज़िम्मेदारी है
कोई बताए ये उनके ग़ुरूर-ए-बेजा को
वो जंग हमने लड़ी ही नहीं जो हारी है

-वसीम बरेलवी

अब हवाएँ ही करेंगी रोशनी का फ़ैसला
जिस दीये में जान होगी वो दीया रह जाएगा

-महशर बदाँयूनी

एक तलवार है, मेरे घर में
जिसका दस्ता है, ठोस सोने का
क्या करेगी मेरी, हिफ़ाज़त वो
डर सा रहता है जिसके खोने का

-एस.एन. रूपायन

दुविधाएँ दुर्बल करती हैं, मन को मत मझदार करो
नफ़रत तो फिर पूरी नफ़रत प्यार करो तो प्यार करो
जिसने झोंक दिया हो ख़ुद को काँटों में, अंगारों में
वो ही सिरमौर हुआ है मस्तक के शृंगारों में
जिन पत्तों ने संकट झेला आषाढ़ी तूफ़ानो में
उसने ही आनंद लिया है सावन की मुस्कानों का
जो भी झंझावत आना है, आने दो, स्वीकार करो
नफ़रत तो फिर पूरी नफ़रत, प्यार करो तो प्यार करो

-मदनमोहन समर

तुम्हारी शान घट जाती कि ओहदा घट गया होता
कहा ग़ुस्से में जो वो प्यार से गर कह दिया होता

जितनी भी कहानियाँ थी, फ़क़त रास्तों की थी
मंज़िल पे आके लुत्फ़ ही बाक़ी नहीं रहा

- तरुणा मिश्रा

सफ़र की हद है वहाँ तक कि कुछ निशान रहे
चले चलो कि जहाँ तक ये आसमान रहे
ये क्या उठाए क़दम और आ गई मंज़िल
मज़ा तो तब है के पैरों में कुछ थकान रहे

-शकील आज़मी

हमसे उजली ना सही राजपथों की शाम
जुगनू बनकर आएँगे हम पगडंडी के काम

इत्तेफाक़ अपनी जगह, ख़ुशक़िस्मती अपनी जगह
ख़ुद बनाता है जहाँ में आदमी अपनी जगह

-अनवर शऊर

परिंदों को नहीं दी जाती तालीम उड़ानों की
वो तो ख़ुद तय करते हैं मंज़िल आसमानों की
रखता है वो हौसला आसमान छूने का
उसको नहीं होती परवाह ज़मानों की

न हमसफ़र न किसी हमनशीं से निकलेगा
हमारे पाँव का काँटा हमीं से निकलेगा
-राहत इन्दौरी

वही हक़दार हैं किनारों के
जो बदल दे बहाव धारों के
-निसार इटावी

दोस्ती में प्यार के क़िस्से फसाने हो गए
अब बदल दो प्यार से, कपड़े पुराने हो गए
मैं खिलौनों की दुकान ढूँढता ही रह गया
और मेरे ये फूल से बच्चे सयाने हो गए

भँवर से लड़ो तुम, लहरों से उलझो
कहाँ तक चलोगे, किनारे-किनारे
-रज़ा हमदानी

मेरे टूटे हौसलो के पर निकलते देखकर
उसने दीवारों को अपनी और ऊँचा कर दिया
-आदिल मंसूरी

ज़िंदगी ख़्वाब बनके रह जाए
इतना बिस्तर से प्यार मत करना
हो अगर हौसला बुलंद तो फिर
वक़्त का इंतज़ार मत करना

गुज़र चुका है ज़माना वो इंतज़ारी का
कि अब मिज़ाज बना लीजिए शिकारी का

ग़लत बातों को ख़ामोशी से सुनना, हामी भर लेना
बहुत हैं फ़ायदे इसमें मगर, अच्छा नहीं लगता
-जावेद अख़्तर

शौक़ को आज़िम-ए-सफ़र रखिए
बेख़बर बनके सब ख़बर रखिए
चाहे नज़रें हों आसमानों पर
पाँव लेकिन ज़मीन पर रखिए
-निकहत इफ़्तिख़ार

वो कहते हैं ये मेरा तीर है जाँ ले के निकलेगा
मैं कहता हूँ ये मेरी जान है बड़ी मुश्किल में निकलेगी
-गुलज़ार देहलवी

दर्द के फूल भी खिलते हैं, बिखर जाते हैं
ज़ख़्म कैसे भी हों कुछ रोज़ में भर जाते हैं
-जावेद अख़्तर

ख़ूबियाँ आएँगी ख़ुद, कमज़ोरियाँ जाने के बाद
गर ग़लत रास्ते न जाएँ राह पर आने के बाद
पर को फैलाने से पहले क़ुव्वते बाज़ू बढ़ा
आसमाँ छोटा लगेगा, हौसला आने के बाद
-सूफ़ियान क़ाज़ी

ख़ुद को मनवाने का मुझको भी हुनर आता है
मैं वह क़तरा हूँ, समंदर मेरे घर आता है
-वसीम बरेलवी

हर शख़्स दौड़ता है, यहाँ भीड़ की तरफ़
फिर ये भी चाहता है उसे रास्ता मिले
-वसीम बरेलवी

मुश्किलों में तुझे तन्हा नहीं होने दूँगा
मेरे रहते हुए ऐसा नहीं होने दूँगा
अपनी पहचान बनाउँगा अलग दुनिया में
ख़ुद को मैं भीड़ का हिस्सा नहीं होने दूँगा

-सूफ़ियान क़ाज़ी

छोटी-छोटी उम्मीदों पर लहरा-लहरा मरता हूँ
जो जन्नत को छोड़ आया था उस आदम का बेटा हूँ

ये सहारा जो नहीं हो तो परेशाँ हो जाए
मुश्किलें जान ही ले लें अगर आसाँ हो जाए

-राहत इन्दौरी

नाम के साथ मेरे काम से पहचानते हैं
मैं तो छोटा हूँ मगर लोग बड़ा मानते हैं
सबको पहचान सकूँ ये तो है मुमकिन भी नहीं
ये करम तेरा है, अब लोग मुझे जानते हैं
-सूफ़ियान क़ाज़ी

हार हो जाती है जब मान लिया जाता है
जीत तब होती है जब ठान लिया जाता है
- शकील आज़मी

ये जो तुम मुझसे मुहब्बत का मोल पूछते हो
तुमसे ये किसने कहा पेड़ छाँव बेचते है
-वसीम बरेलवी

पेड़ राहों में अगर कोई घना मिल जाएगा
तो सुलगती धूप में एक आसरा मिल जाएगा
तुमको जन्नत मिल तो जाएगी इबादत के तुफ़ैल
ख़िदमते इन्सा करोगे तो ख़ुदा मिल जाएगा
दूसरों की राह से बस ख़ार चुनते जाइये
आपको मंज़िल का अपनी रास्ता मिल जाएगा
-सूफ़ियान क़ाज़ी

वो आए मुझको ढूँढने और मैं मिलूँ नहीं
ऐसी भी ज़िंदगानी में तकदीर चाहिए
-बेबाक इलाहाबादी

मेरी मंशा है मेरे आँगन में ना दीवार उठे
मेरे भाई मेरे हिस्से की ज़मीं तू रख ले
-राहत इन्दौरी

सफ़र में मुश्किलें आए तो जुर्रत और बढ़ती है
कोई जब रास्ता रोके तो हिम्मत और बढ़ती है
अगर बिकने पे आ जाओ तो घट जाते है दाम अक्सर
ना बिकने का इरादा हो तो क़ीमत और बढ़ती है

-नवाज़ देवबन्दी

ये बात सच है कि आँधी ख़ुदा चलाता है
मगर हमारे दीये भी तो वो बनाता है

-जौहर कानपुरी

हर फूल की क़िस्मत में नहीं, सेहरे की रौनक़
कुछ फूल तो खिलते हैं, मज़ारों के लिए भी

ख़्वाहिश तो बस अपने पर फैलाती है
मेहनत ही इंसान को आगे लाती है
उठ के धरा से मंच तलक जाने की चाह
जाने कितनों का जीवन खा जाती है
यूँ तो है स्टेज की दूरी बीस क़दम
लेकिन सालों-साल सफ़र करवाती है
बरसों ख़ुद पर मेहनत करनी पड़ती है
बरसों में क़िरदार से ख़ुशबू आती है

-सूफ़ियान क़ाज़ी

दुश्मनी लाख सही ख़त्म न कीजे रिश्ता
दिल मिले या ना मिले हाथ मिलाते रहिए

-निदा फ़ाज़ली

हमारा ज़िक्र तो हर पल हुआ फ़साने में
तो क्या हुआ जो थोड़ी देर हुई आने में

सफ़र के क़द से न रास्तों की लंबाई से डरता हूँ
न पर्वत और न मैं पर्वत की उँचाई से डरता हूँ
अभी घर ने मेरे तहज़ीब का दामन नहीं छोड़ा
मैं दादा बन चुका हूँ पर बड़े भाई से डरता हूँ

-अशोक साहिल

क्या हार में, क्या जीत में किंचित नहीं भयभीत में
कर्तव्य पथ पर जो मिले, ये भी सही-वो भी सही

- डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

फल मकसद-ए-तालीम का बाज़ार में आए
जो बात किताबों में हैं वो किरदार में आए

सिलसिला ज़ख़्म-ज़ख़्म जारी है
ये ज़मीं दूर तक हमारी है
नाव काग़ज़ की छोड़ दी मैंने
अब समुंदर की ज़िम्मेदारी है
-अख़्तर नज्मी

मेहरबाँ होकर किसी रोज़ बुला लो मुझको
मैं गया वक़्त नहीं जो आ भी न सकूँ
- मिर्ज़ा ग़ालिब

शर्तें लगाई जाती नहीं दोस्ती के साथ
कीजे मुझे क़ुबूल मेरी हर कमी के साथ
-वसीम बरेलवी

कठिन है राहगुज़र थोड़ी दूर साथ चलो
बहुत बड़ा है सफ़र थोड़ी दूर साथ चलो
तमाम उम्र कहाँ कोई साथ देता है
मैं जानता हूँ मगर थोड़ी दूर साथ चलो

-अहमद फ़राज़

सफ़र में धूप तो होगी जो चल सको तो चलो
सभी हैं भीड़ में तुम भी निकल सको तो चलो
यहाँ किसी को कोई रास्ता नहीं देता
मुझे गिरा के अगर तुम संभल सको तो चलो

-निदा फ़ाज़ली

फटी कमीज़ नुची आस्तीन, कुछ तो है
ग़रीब शर्मो हया में हसीन कुछ तो है
लिबास क़ीमती रखकर भी शहर नंगा है
हमारे गाँव में मोटा, महीन कुछ तो है

-बेकल उत्साही

फ़लक को ज़िद है जहाँ बिजलियाँ गिराने की
हमें भी ज़िद है वहीं आशियाँ बनाने की

चले चलिए कि चलना ही दलील-ए-क़ामयाबी है
जो थककर बैठ जाते हैं वो मंज़िल पा नहीं सकते

-हफ़ीज़ बनारसी

ऐब चेहरों का छुपा लेना हुनर था जिनका
सोचिये कितने वो आईने निराले होंगे
तुम को तो मील के पत्थर पे भरोसा है मगर
मेरी मंज़िल तो मेरे पाँव के छाले होंगे

-बेकल उत्साही

न जाने कौन कब लूट ले राह में
काफ़िले से अलग मत रहा कीजिए

कह दो दुनिया से न उलझे किसी दीवाने से
ये अजब लोग हैं जी उठते हैं मर जाने से

-मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़

हारे हुए परिन्दे, ज़रा उड़के देख तो
आ जाएगी ज़मीन पे छत आसमान की
बुझ जाए सरेशाम ही जैसे कोई चिराग़
कुछ यूँ है शुरूआत मेरी दास्तान की

-गोपालदास 'नीरज'

ख़ामोश समंदर ठहरी हवा, तूफाँ की निशानी होती है
डर और ज़्यादा लगता है, जब नाव पुरानी होती है
अनमोल बुज़ुर्गों की बातें, अनमोल बुज़ुर्गों का साया
उस चीज़ की क़ीमत मत पूछो, जो चीज़ पुरानी होती है

लहू न हो तो क़लम तरजुमा नहीं होता
हमारे दौर में आँसू ज़ुबाँ नहीं होता
जहाँ रहेगा वहीं रौशनी लुटाएगा
किसी चराग़ का अपना मकाँ नहीं होता...

-वसीम बरेलवी

मुझे थकने नहीं देते ये ज़रूरत के पहाड़
मेरे बच्चे मुझे बूढ़ा नहीं होने देते

-मेराज फ़ैज़ाबादी

हयात लेके चलो, क़ायनात लेके चलो
चलो तो सारे ज़माने को साथ लेके चलो

-मख़दूम मोहिउद्दीन

जिसे दुश्मन समझता हूँ वही अपना निकलता है
हर एक पत्थर से मेरे सर का कुछ रिश्ता निकलता है

डरा-धमका के तुम हमसे वफ़ा करने को कहते हो
कहीं तलवार से भी पाँव का काँटा निकलता है?

किसी के पास आते हैं तो दरिया सूख जाते हैं
किसी की एड़ियों से रेत में चश्मा निकलता है

-मुनव्वर राना

मैंने मुल्कों की तरह लोगों के दिल जीते हैं
ये हुकूमत किसी तलवार की मोहताज नहीं

-राहत इंदौरी

ये कैंचियाँ हमें उड़ने से ख़ाक़ रोकेंगी
हम परों से नहीं हौसलो से उड़ते हैं

-राहत इंदौरी

तुम्हारे शहर में मैयत को सब काँधा नहीं देते
हमारे गाँव में छप्पर भी सब मिलकर उठाते हैं
इन्हें फ़िरक़ापरस्ती मत सिखा देना कि ये बच्चे
ज़मीं से चूमकर तितली के टूटे पर उठाते हैं

-मुनव्वर राना

जंग में काग़ज़ी अफ़राद से क्या होता है
हिम्मतें लड़ती हैं तादाद से क्या होता है

-राहत इंदौरी

ख़ुद अपने अपमान से बच, यारों के अहसान से बच
जो निकले आसानी से ऐ दिल उस अरमान से बच

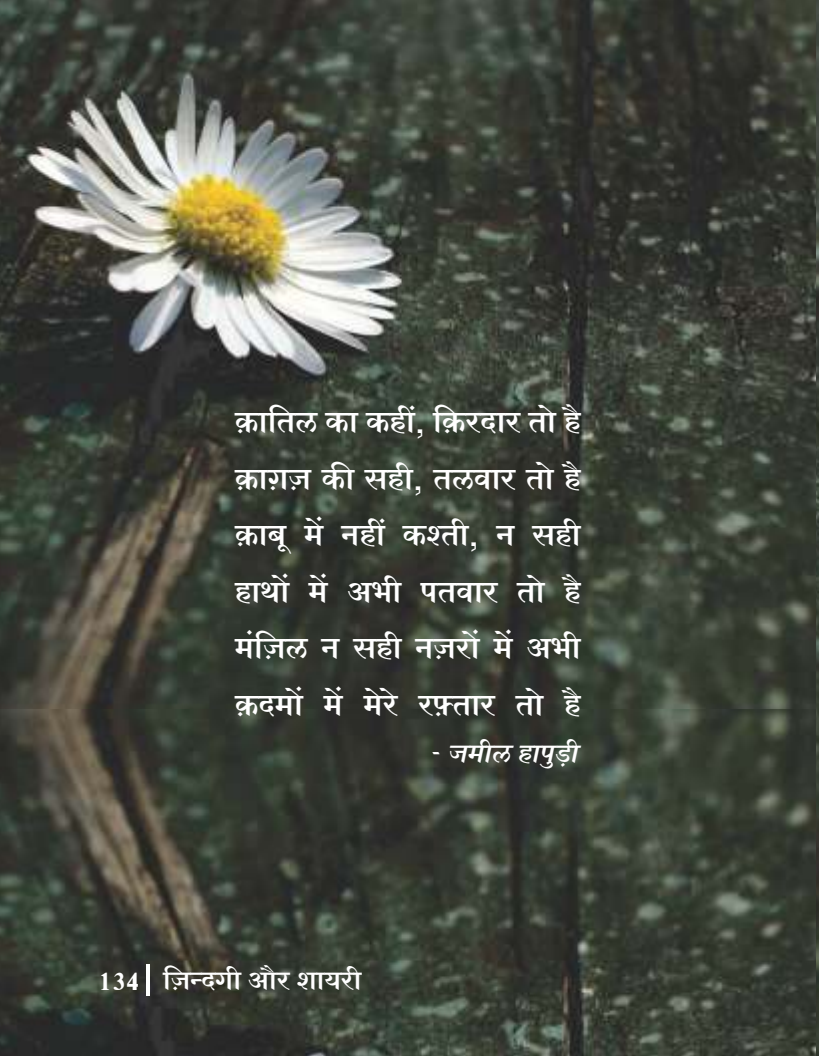

क़ातिल का कहीं, क़िरदार तो है
क़ाग़ज़ की सही, तलवार तो है
क़ाबू में नहीं कश्ती, न सही
हाथों में अभी पतवार तो है
मंज़िल न सही नज़रों में अभी
क़दमों में मेरे रफ़्तार तो है

- जमील हापुड़ी

जगमगाते हुए सूरज पर नज़र रखता हूँ
तुम समझते हो सितारों बहल जाऊँगा

हद से बढ़े जो इल्म तो है ज़हर दोस्तो
सब कुछ जो जानते हैं, वो कुछ जानते नहीं

-ख़ुमार बाराबंकवी

पैरों तले थे जितने समंदर सरक गए
अब क्या करूँगा देख के मुँह बादबान का
आकाश कोसने से कोई फायदा नहीं
बेहतर है नुक़्स देख लूँ अपनी उड़ान का

-सादिक़

हौसला हो तो उड़ानों में मज़ा आता है
पर बिखर जाएँ हवाओं में तो ग़म मत करना

आप हर दौर की तारीख़ उठाकर देखें
ज़ुल्म जब हद से गुज़रता है फ़ना होता है

मुहब्बत की कोई क़ीमत मुक़र्रर हो नही सकती है
ये जिस क़ीमत पे मिल जाए उसी क़ीमत पे सस्ती है
मुहब्बत की नहीं ख़्वाहिश जवानी के सहारे की
जवानी भी मुहब्बत के सहारे को तरसती है

मैं नूर बन के ज़माने में फैल जाऊँगा
तुम आफ़ताब में कीड़े निकालते रहना
-राहत इन्दौरी

यक-ब-यक आए अंधेरों से न घबराए कोई
रब के क़ानून में लिक्खी है सहर शाम के बाद
-विजय तिवारी 'विजय'

रात-दिन अपने कलेजे से लगाए रक्खा
दर्दे-दिल तुझको बड़े नाज़ से पाला हमने
तूने दुनिया के अँधेरों में धकेला हमको
तेरी दुनिया में किया फिर भी उजाला हमने

-प्रेम बिहारीलाल सक्सेना 'रवाँ'

चमक माँगी नहीं मैंने किसी से
मैं ख़ुद निखरा हूँ अपनी रोशनी से

-गोविंद गीते

न हँस इन बदनसीबों पर मुनासिब वक़्त आने दे
इसी महफ़िल से उट्ठेंगे सितारे तोड़ने वाले

-शौक़ माहिरी

दोनों ही पक्ष आए हैं तैयारियों के साथ
हम गर्दनों के साथ हैं वो आरियों के साथ
बोया न कुछ भी, फ़स्ल मगर ढूँढते हैं लोग
कैसा मज़ाक़ चल रहा है क्यारियों के साथ
-कुँअर 'बेचैन'

मंज़िल की जुस्तजू में क्यों फिर रहा है राही
इतना अज़ीम हो जा मंज़िल तुझे पुकारे
-कल्पना सरोज

बच्चों के छोटे हाथों को चाँद सितारे छूने दो
चार किताबें पढ़कर ये भी हम जैसे हो जाएँगे
- निदा फ़ाज़ली

ज़िंदा रहना है तो मरने का सलीक़ा सीखो
वरना मरने को तो हर व्यक्ति को मर जाना है
आप औरों के हुनर को भी नहीं कहते हुनर
हमने तो आपके ऐबो को हुनर जाना है

-स्वामी श्यामानंद सरस्वती 'रौशन'

आप हर दौर की तारीख़ उठाकर देखें
ज़ुल्म जब हद से गुज़रता है, फ़ना होता है

-मंज़र भोपाली

तुझी को आँख भर देख पाऊँ,
मुझे इतनी बीनाई बहुत है
नहीं चलने लगी यूँ ही मेरे पीछे ये दुनिया,
मैंने ठुकराई बहुत है

-वसीम बरेलवी

वो एक ज़ख़्मी परिन्दा है, वार मत करना
पनाह माँग रहा है, शिकार मत करना
इरादा सामने वाला भी बदल सकता है
मुक़ाबिला ही सही, पहले वार मत करना
बिछड़ के तुमसे मैं जिन्दा रहूँ, नहीं मुमकिन
ज़माना लाख कहे, ऐतबार मत करना
जहाँ से कह दो कि हममें नहीं कोई रंजिश
सहन को बाँट के घर में दीवार मत करना

-अन्दाज़ देहलवी

मुफ़्त का अहसान न लेना यारों
दिल अभी और भी सस्ते होंगे

मुझे ग़म है तो बस इतना ग़म है
तेरी दुनिया मेरे ख़्वाबों से कम है

-वसीम बरेलवी

नज़दीक़ से खुशरंग वो मंज़र नहीं देखा
तितली के परों को कभी छूकर नहीं देखा
जब पाँव के छालों ने चराग़ों का दिया काम
फिर हमने कोई मील का पत्थर नहीं देखा

-ज़की तारिक़

ग़लतफ़हमी की गुंजाइश नहीं, सच्ची मुहब्बत में
जहाँ किरदार हल्का हो, कहानी डूब जाती है

लगता तो बेख़बर सा हूँ लेकिन ख़बर में हूँ
तेरी नज़र में हूँ तो सबकी नज़र में हूँ

-वसीम बरेलवी

इक मासूम सा बच्चा मुझमें अब तक ज़िन्दा है
छोटी-छोटी बात पे अब भी रो सकता हूँ मैं
सोच-समझकर चट्टानों से उलझा हूँ वर्ना
बहती गंगा में हाथों को धो सकता हूँ मैं

-आलम ख़ुर्शीद

आँख में पानी रखो होठों पे चिंगारी रखो
ज़िंदा रहना है तो तरकीबें बहुत सारी रखो
राह के पत्थर से बढ़कर कुछ नहीं है मंज़िलें
रास्ते आवाज़ देते हैं सफ़र जारी रखो

-राहत इन्दौरी

हर घड़ी चश्मे-ख़रीदार में रहने के लिए
कुछ हुनर चाहिए बाज़ार में रहने के लिए
ऐसी मजबूरी नहीं है कि चलूँ पैदल मैं
ख़ुद को गरमाता हूँ रफ़्तार में रहने के लिए

-शकील आज़मी

भीड़ में शामिल रहे पर भीड़ से अलग दिखे
आदमी का कुछ अलग क़िरदार होना चाहिए

हमारे फ़न की बदौलत हमें तलाश करे
मज़ा तो तब है जब, शोहरत हमें तलाश करे

हम ले के अपना माल जो मेले में आ गए
सारे दुकानदार दुकाने बढ़ा गए
दुनिया की शोहरतें हैं उन्हीं के नसीब में
अंदाज़ जिनको बात बनाने के आ गए
दोनों ही एक जैसे हैं कुटिया हो या महल
दीवारो-दर के मानी समझ में जो आ गए
पंडित उलझ के रह गए पोथी के जाल में
क्या चीज़ है ये ज़िंदगी बच्चे बता गए

-हस्तीमल 'हस्ती'

महफ़िल में जिसे सब ग़ौर से देख रहे थे
देखा ना मैंने उसे तो उसने मुझे देखा

-नवाज़ देवबंदी

ग़म हो कि ख़ुशी, दोनों कुछ दूर के साथी हैं
फिर रस्ता ही रस्ता है, हँसना है न रोना है

-निदा फ़ाज़ली

चिराग़ हो के न हो दिल जला के रखते हैं
हम आँधियों में भी तेवर बला के रखते हैं
मिला दिया है पसीना भले ही मिट्टी में
हम अपनी आँख का पानी बचा के रखते हैं
हमें पसंद नहीं जंग में भी चालाकी
जिसे निशाने पे रखते हैं बता के रखते हैं

-हस्तीमल 'हस्ती'

कोई दरख़्त कोई सायबाँ रहे न रहे
बुज़ुर्ग ज़िंदा रहें आसमां रहे न रहे
हमें तो लड़ना है दुनिया में ज़ालिमों के ख़िलाफ़
क़लम रहे कोई तीर-ओ-कमाँ रहे ना रहे

- रईस अंसारी

ख़ुदा पे छोड़ा, दुआओं से घर नहीं बाँधा
सफ़र पे निकले तो रस्ते-सफ़र नहीं बाँधा
कमाया जैसे उसी शान से उड़ाया भी
कभी भी नोट पर हमने रबर नहीं बाँधा
-शकील आज़मी

उसके तेवर समझना भी आसां नहीं
बात औरों की थी, हम निग़ाहों में थे
-वसीम बरेलवी

अपनी सूरत से जो ज़ाहिर वो छुपाएँ कैसे
तेरी मर्ज़ी के मुताबिक नज़र आएँ कैसे
-वसीम बरेलवी

आँख में पानी रखो, होंठों पे चिंगारी रखो
ज़िदा रहना है तो तरकीबें बहुत सारी रखो
राह के पत्थर से बढ़कर कुछ नहीं हैं मंज़िलें
रास्ते आवाज़ देते हैं सफ़र जारी रखो
एक ही नदी के हैं ये दो किनारे दोस्तो
दोस्ताना ज़िंदगी से मौत से यारी रखो
आते-जाते पल ये कहते हैं हमारे कान में
कूच का ऐलान होने को है तैयारी रखो

-राहत इन्दौरी

उस घर में फ़ाक़ा कभी दाख़िल ही नहीं होता
रहता है सदा जो घर मेहमान के साए में

तुम्हारी जीत मेरा हौसला बढ़ाएगी
इसीलिए तो मैं तुमसे लड़ाई हार गया

किसी के घर का बँटवारों से अंदाज़ा नहीं होता
हो किसकी जीत तलवारों से अंदाज़ा नहीं होता
वहीं पर कश्तियाँ डूबीं जहाँ ख़ामोश था दरिया
कभी गहराई का धारों से अंदाज़ा नहीं होता
जो पूछा कितने दिन से हैं तेरे पाँवों में ज़ंजीरें
कहा, क्या इनकी झंकारों से अंदाज़ा नहीं होता

- 'मासूम' ग़ाज़ियाबादी

लोग यहाँ फूलों से कट जाते हैं
क्यों पागल तलवार उठाए फिरते हैं

ग़म बढ़े आते हैं क़ातिल निगाहों की तरह
तुम छुपा तो मुझे ऐ दोस्त गुनाहों की तरह

- सुदर्शन फाकिर

दिल के दर्द को छुपाना कितना मुश्किल है
टूट के फिर मुस्कुराना कितना मुश्किल है
किसी के साथ दूर तक जाओ फिर देखो
अकेले लौट के आना कितना मुश्किल है

मंज़िल न दे, चराग़ न दे, हौसला तो दे
तिनके का ही सही, तू मगर आसरा तो दे
बरसों मैं तेरे नाम पे खाता रहा फ़रेब
मेरे ख़ुदा कहाँ है तू अपना पता तो दे
-राना सहरी

सामने तन के जिस दिन खड़ी हो गई
एक पर्वत से राई बड़ी हो गई
हाथ लहराए फिर मुट्ठियाँ तन गई
डर मिटा फिर ख़ुशी हर घड़ी हो गई।

-किशन तिवारी

आदमी पेड़ ही लगाता है
फल तेरी रहमतों से आता है

हवा ख़िलाफ़ चली तो चराग़ ख़ूब जला
ख़ुदा भी होने के क्या-क्या सुबूत देता है

- नवाज़ देवबंदी

दिल के ख़िलाफ़ चल न अना के ख़िलाफ़ चल
कुछ कर गुज़रना हो तो हवा के ख़िलाफ़ चल
खुश-फ़हमियों के लुत्फ़ में मंज़िल मिली किसे
वहमो-गुमानो-सब्रो-अता के ख़िलाफ़ चल
बुज़दिल बनेगा 'अज़्म' तो पग-पग पे मौत है
जीना है बावले तो असा के खिलाफ चल

-मुस्तहसन 'अज़्म'

खेंच लाती है हमें तेरी मुहब्बत वरना
आख़िरी बार, कई बार मिले हैं तुझसे
जानते हैं कि नहीं सहल मुहब्बत करना
ये तो इक ज़िद में मरे यार मिले हैं तुझसे

- अब्बास ताबिश

लाख ख़ौफ़ तारी हो ज़लज़लों के आने का
सिलसिला न छोड़ेंगे हम भी घर बनाने का
क़ामयाब करती है हौसलो की मज़बूती
दिल में हौसला रखिए कश्तियाँ जलाने का

-माजिद देवबन्दी

ये जो कुछ लोग फरिश्तों से बने फिरते है
मेरे हत्थे कभी चढ़ जाएँ तो इंसा हो जाएँ

- राहत इंदौरी

काग़ज़ की एक नाव अगर पार हो गई
इसमें समंदरों की कहाँ हार हो गई

वक़्त आने दे ज़रा बात करेंगे तुझसे
ज़िंदगी हम भी मुलाक़ात करेंगे तुझसे
आज सुन ले हमें इन्सान के लबो-लहजे में
कल फ़रिश्तों की तरह बात करेंगे तुझसे
रास्ता देख के चल वरना ये दिन ऐसे हैं
गूंगे पत्थर भी सवालात करेंगे मुझसे

पहले तो ये चुपके-चुपके यूँ ही हिलते-डुलते हैं
दिल के दरवाज़े हैं आख़िर खुलते, खुलते, खुलते हैं
-कुँअर बेचैन

ऐसे मिला करो कि करें लोग आरज़ू
ऐसे रहा करो कि ज़माना मिसाल दे

कभी-कभी तेरी पलकों पे झिलमिलाऊँ मैं
तू इंतज़ार करे और भूल जाऊँ मैं
समन्दरों में पहुँचकर फ़रेब मत देना
अगर कहो तो किनारे पर डूब जाऊँ मैं

-कैसरूल जाफ़री

आँख मिलकर मैं ना देखूँ, जिससे मेरा दिल न मिले
सबसे रस्मन हाथ मिलाना, मेरे बस की बात नहीं

-फ़ना जौनपुरी

कोई उलझन ही रही होगी जो वो भूल गया
मेरे हिस्से में कोई शाम सुहानी लिखना

-कुँअर बेचैन

बदन कजला गया तो दिल की ताबानी से निकलूँगा
मैं सूरज बनके इक दिन अपनी पेशानी से निकलूँगा
ज़मीर-ए-वक़्त में पैबस्त हूँ मैं फाँस की सूरत
ज़माना क्या समझता है कि आसानी से निकलूँगा
मैं ऐसा ख़ूबसूरत रंग हूँ दीवार का अपनी
अगर निकला तो घरवालों की नादानी से निकलूँगा

-ज़फ़र गोरखपुरी

दिल ऐसा कि सीधे किए जूते भी बड़ों के
ज़िद इतनी कि ख़ुद ताज उठाकर नहीं पहना

-मुनव्वर राना

ख़ुद को मनवाने का मुझको भी हुनर आता है
मैं क़तरा हूँ, समंदर मेरे घर आता है

-वसीम बरेलवी

जूते फटे पहन के, आकाश पर चढ़े थे
सपने हमारे हरदम, औक़ात से बड़े थे

सर काटने से पहले दुश्मन ने सर झुकाया
जब देखा हम निहत्थे मैदान में खड़े थे

तलवार पहले काटी फिर कट गए ये बाज़ू
और बावजूद इसके हम देर तक लड़े थे

ऊँची इमारतों में हुआ जश्न सारी रात
हम पत्थरों की तरह बुनियाद में गड़े थे

फिर भी नहीं किया था हमने ज़मीं का सौदा
दो-चार आसमान तो क़दमों पर गिरे पड़े थे

-मनोज मुंतशिर

इस ज़माने में कुछ तो अच्छा रहने दिया जाए
इन बच्चों को सिर्फ़ बच्चा रहने दिया जाए

बारूदों के ढेर पर बैठी हुई दुनिया
शोलों से हिफ़ाज़त का हुनर पूछ रही है

- इमरान प्रतापगढ़ी

ख़ुद को इतना भी मत बचाया कर
बारिशें हों तो भीग जाया कर
दर्द हीरा है दर्द मोती है
दर्द आँखों से मत बहाया कर
चाँद लाकर कोई नहीं देगा
अपने चेहरे से जगमगाया कर

-शकील आज़मी

दहलीज़ पर रख दी है किसी शख़्स ने आँखें
रौशन कभी इतना तो दीया हो ही नहीं सकता

-मुनव्वर राना

बस तो मेरी आवाज़ में आवाज़ मिला दे
फिर देख कि इस सहर में क्या हो नहीं सकता

अपनी मंज़िल पे पहुँचना भी, खड़े रहना भी
कितना मुश्किल है बड़े होके बड़े रहना भी
मसलेहत से भरी दुनिया में ये आसान नहीं
ज़िद भी कर लेना, उसी ज़िद पे अड़े रहना भी

-शकील आज़मी

हुनर को उनके परख के भी जाँचते कम हैं
हम अपने शहर के लोगों को आँकते कम हैं
क़सीदे लिखते हैं हम बाहरी चराग़ों पर
हो अपने शहर में सूरज तो छापते कम हैं

-सूफ़ियान क़ाज़ी

परों को खोल ज़माना उड़ान देखता है
ज़मीं पे बैठके क्या आसमान देखता है
जो चल रहा है निगाहों में मंज़िलें लेकर
वो धूप में भी कहाँ साएबान देखता है
मिला है हुस्न तो इस हुस्न की हिफ़ाज़त कर
संभल के चल तुझे सारा जहान देखता है

-शकील आज़मी

किसी का ध्यान कभी उस तलक नहीं जाता
सितारा थोड़ा सा जब तक चमक नहीं जाता
जुनून हौसला कोशिश बहुत ज़रूरी है
कोई भी पाँव से मंज़िल तलक नहीं जाता

-सूफ़ियान क़ाज़ी

आप नाराज़ हों, झुँझलाएँ, ख़फ़ा हो जाएँ
बात, इतनी भी ना बिगड़े कि जुदा हो जाएँ
बंदा बनने को कोई यहाँ तैयार नहीं
सभी इसी ज़िद में है कि ख़ुदा हो जाएँ

-वसीम बरेलवी

प्यार के दुश्मन तू कभी प्यार से कहकर तो देख
एक तेरा दर ही क्या हम तो ज़माना छोड़ दें
बारिशें दीवार धो देने की आदी हैं तो क्या
हम इसी डर से तेरा चेहरा बनाना छोड़ दें

-वसीम बरेलवी

कभी गिरते तो कभी गिरके संभलते रहते
बैठे रहने से तो बेहतर था कि चलते रहते
चल के तुम ग़ैर के क़दमों पे कहीं के न रहे
अपने पैरों पे अगर चलते तो चलते रहते
-नईम अख़्तर ख़ादमी

वो उम्र में बढ़े तो हैं, क़द में बढ़े नहीं
इस वास्ते नज़र में हमारे चढ़े नहीं
घेरे हुए खड़े हैं वो पंजों के बल हमें
कुछ लोग चाहते हैं क़द मेरा बढ़े नहीं

वो दूसरों से मसर्रत तलब नहीं करते
जो ख़ुद नसीब के हैं बनाने वाले
हमारी प्यास न मागेंगी भीख के क़तरे
हम हैं रेत से ज़मज़म निकालने वाले

-जौहर कानपुरी

चाँद में ढलने, सितारों में निकलने के लिए
मैं तो सूरज हूँ बुझूँगा भी तो जलने के लिए
मंज़िलों ! तुम ही कुछ आगे की तरफ़ बढ़ जाओ
रास्ता कम है मिरे पाँव को चलने के लिए

-शकील आज़मी

क्या दुःख है समंदर को बता भी नहीं सकता
आँसू की तरह आँख तक आ भी नहीं सकता
तू छोड़ रहा है तो ख़ता इस में तेरी क्या
हर शख़्स मेरा साथ निभा भी नहीं सकता
प्यासे रह जाते हैं ज़माने के सवालात
किसके लिए ज़िंदा हूँ, बता भी नहीं सकता

-वसीम बरेलवी

कमा के पूरा किया जितना भी ख़सारा था
वहीं से जीत के निकला जहाँ मैं हारा था
कहानी सुनते हुए बुझ गई थी सब आँखें
जो जल रहा था मिरे साथ इक सितारा था

-शकील आज़मी

चिंगारियों को शोला बनाने से क्या मिला
तूफ़ान सो रहा था, जगाने से क्या मिला
आँधी तेरे ग़ुरूर का सर होगा बुलंद
वरना तुझे चिराग़ बुझाने से क्या मिला
तुमने भी कुछ दिया है, ज़माने को सोचना
शिकवा तो कर रहे हो, ज़माने से क्या मिला

-मंज़र भोपाली

छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता
टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता

मन हारकर मैदान नहीं जीते जाते
न ही मैदान जीतने से, मन भी जीते जाते हैं

-अटल बिहारी वाजपयी

ज़िंदगी की हर कहानी बे-असर हो जाएगी
हम न होंगे तो ये दुनिया दर-ब-दर हो जाएगी

पाँव पत्थर कर के छोड़ेगी अगर रुक जाइए
चलते रहिए तो ज़मीं भी हमसफ़र हो जाएगी

जुगनुओं को साथ लेकर रात रौशन कीजिए
रास्ता सूरज का देखा तो सहर हो जाएगी

-राहत इन्दौरी

ऊँचे-ऊँचे दरबारों से क्या लेना
बेचारे हैं बेचारों से क्या लेना

जो माँगेंगे तूफ़ानों से माँगेंगे
काग़ज़ की इन पतवारों से क्या लेना

-राहत इन्दौरी

काम सब ग़ैर-ज़रूरी हैं जो सब करते हैं
और हम कुछ नहीं करते हैं ग़ज़ब करते हैं
आप की नज़रों में सूरज की है जितनी अज़मत
हम चराग़ों का भी उतना ही अदब करते हैं
हम पे हाकिम का कोई हुक़्म नहीं चलता है
हम कलंदर हैं शहंशाह लक़ब करते हैं

-राहत इन्दौरी

अब तो कुछ दोस्त भी इस बात से घबराते हैं
हम कहीं जाए, हम ही नज़र आते हैं
ये नफ़रत है, इसे लम्हों में दुनिया वाले जान लेते हैं
मोहब्बत का पता चलते ज़माने बीत जाते हैं

-वसीम बरेलवी

ऐ ख़ुदा रेत के सहरा को समंदर कर दे
या छलकती हुई आँखों को पत्थर कर दे
और कुछ भी मुझे दरकार नहीं है लेकिन
मेरी चादर मेरे पैरों के बराबर कर दे

-शाहिद मीर

चमन को सींचने में पत्तियाँ कुछ झड़ गई होंगी
यही इल्ज़ाम मुझ पर लग रहा है बेवफ़ाई का
मगर कलियों को जिसने रौंद डाला अपने हाथों से
वही दावा कर रहे हैं इस चमन की रहनुमाई का

-अल्लामा इक़बाल

हमारी हौसलामंदी का क़ायल है जहाँ सारा
हम आँखों में आँखें डालकर मंज़िल से मिलते हैं
हमारे बाद दुनिया ढूँढती रह जाएगी हमको
हमारे जैसे दुनिया को बड़ी मुश्किल से मिलते हैं

उन्हें ये ज़िद है मुझे देखकर किसी को न देख
मेरा ये शौक़ है कि सबसे सलाम करता चलूँ
ये मेरे ख़्वाबों की दुनिया न सही लेकिन
अब आ गया हूँ तो दो दिन क़याम करता चलूँ

-शादाब लाहौरी

हर पल ध्यान में बसने वाले लोग अफ़साने हो जाते हैं
आँखें बूढ़ी हो जाती हैं, ख़्वाब पुराने हो जाते हैं
सारी बात ताल्लुक वाली जज़्बों की सच्चाई तक है
मैल दिलों में आ जाए तो घर वीराने हो जाते हैं

-अमजद

बुरे अमल से मेरा दिल भी यूँ दहलता है
नज़र से गिरके कहाँ आदमी संभलता है
जहाँ पे लगता है दरवाज़े बंद हैं सारे
वहीं से कोई नया रास्ता निकलता है

-सूफ़ियान क़ाज़ी

तुम्हारा क़द मेरे क़द से बहुत ऊँचा सही लेकिन
चढ़ाई पर कमर सबको झुकाकर चलना पड़ता है
सियासत साज़िशों का एक ऐसा खेल है जिसमें
कई चालों को ख़ुद से भी छुपाकर चलना पड़ता है

-अशोक साहिल

जुगनुओं को जतन से पाला है
तब कहीं मुश्क भर उजाला है
तुमने ठोकर पर रख दिया दिल को
हमने किस-किस तरह संभाला है

सबको रुस्वा बारी-बारी किया करो
हर मौसम में फतवे जारी किया करो
क़तरा-क़तरा शबनम गिनकर क्या होगा
दरियाओं की दावेदारी किया करो
चाँद ज़्यादा रौशन है तो रहने दो
जुगनू-भैया जी मत भारी किया करो
रोज़ वही इक कोशिश ज़िंदा रहने की
मरने की भी कुछ तैयारी किया करो

-राहत इन्दौरी

मंज़िल पे ध्यान हमने ज़रा भी अगर दिया
आकाश ने डगर को उजालों से भर दिया
रुकने की भूल हार का कारण न बन सकी
चलने की धुन ने राह को आसान कर दिया

-आलोक श्रीवास्तव

है मुश्किल फिर भी करना चाहता हूँ
कली में रंग भरना चाहता हूँ
मेरी हर राह को रोको रक़ीबों
मैं ख़ुद से गुज़रना चाहता हूँ

- कुमार विश्वास

हमारा तीर कुछ भी हो निशाने तक पहुँचता है
परिंदा चाहे कुछ भी हो ठिकाने तक पहुँचता है
अभी ऐ ज़िंदगी तुझको हमारा साथ देना है
अभी बेटा हमारा सिर्फ़ काँधों तक पहुँचता है

-मुनव्वर राना

न कमरा जान पाता है, न अंगनाई समझती है
कहाँ देवर का दिल अटका है, ये भौजाई समझती है
हमारे और उसके बीच एक धागे का रिश्ता है
हमें लेकिन हमेशा वो सगा भाई समझती है

-मुनव्वर राना

फिर कभी किसी कबूतर की ईमानदारी पर शक मत करना
वो तो इस घर को इसी मीनार से पहचानता है
शहर वाक़िफ़ है मेरे फ़न की बदौलत मुझसे
आपको जज़्बा-ए-दस्तार से पहचानता है

बाग़ी हुए धारे की तरफ़ देख रहा था
तूफ़ान किनारे की तरफ़ देख रहा था
दुनिया को मेरा इक इशारा ही था काफ़ी
मैं तेरे इक इशारे की तरफ़ देख रहा था

बेख़ुदी में रेत के कितने समंदर पी गया
प्यास भी क्या शै है, मैं घबराकर पत्थर पी गया
मैक़दे में किसने कितनी पी, ये तो ख़ुदा जाने मगर
मैक़दा तो मेरी बस्ती के कई घर पी गया

-मेराज फ़ैज़ाबादी

सलीक़ा आया नहीं कामकाज का हमको
उठाया बोझ तो कपड़े से सर नहीं बाँधा

जो मुझसे जिन्न थे, उन्हें बोतल में बंद किया
मगर किसी ने मेरे दिल का डर नहीं बांधा

किसी ने बाँधा नज़र से किसी ने चेहरे से
तुम्हारी तरह मगर उम्र भर नहीं बाँधा

-शकील आज़मी

तुम्हारे घर में दरवाज़ा है लेकिन
तुम्हे ख़तरे का अंदाज़ा नहीं है
मुझे ख़तरे का अंदाज़ा है लेकिन
मेरे घर में दरवाज़ा नहीं है

जो हुक़्म देता है वो इल्तिजा भी करता है
ये आसमान कहीं पर झुका भी करता है
तू बेवफा है तो ले इक बुरी ख़बर सुन ले
कि इंतज़ार मेरा दूसरा भी करता है

-मुनव्वर राना

मेरी वफ़ाएँ उसकी जफ़ाओं के सामने
जैसे कोई चराग़ हवाओं के सामने
गर्दिश तो चाहती है तबाही मेरी मगर
मजबूर है किसी दुआओं के सामने

निगाहों में सपना सजा कर तो देखो
इरादे को मकसद बना कर तो देखो

किनारे पे रहकर किसे क्या मिला है
ज़रा बीच सागर में जाकर तो देखो

मुहब्बत के जज़्बे में ताक़त है कितनी
दिलों में ये जज़्बा जगाकर तो देखो

सितारों से आगे है मंज़िल तुम्हारी
ज़रा हौसले को जगा कर तो देखो

-मुस्तहसन 'अज़्म'

पेशानी को सजदे भी अता कर मेरे मौला
आँखों से तो यह क़र्ज़ अदा हो नहीं सकता
बस तू मेरी आवाज़ में आवाज़ मिला दे
फिर देख इस शहर में क्या हो नहीं सकता

सुना है लोग उसे आँख भर के देखते हैं
तो उसके शहर में कुछ दिन ठहर के देखते हैं
सुना है बोले तो बातों से फूल झड़ते हैं
ये बात है तो चलो बात करके देखते हैं

-अहमद फ़राज़

मंज़िल पर ना पहुँचे उसे रास्ता नहीं कहते
दो-चार क़दम चलने को चलना नहीं कहते
कम हिम्मती ख़तरा है, समंदर के सफ़र में
तूफ़ान को हम दोस्तों ख़तरा नहीं कहते

-नवाज़ देवबंदी

नये कमरों में अब चीज़ें पुरानी कौन रखता है
परिंदों के लिए शहरों में पानी कौन रखता है
ये तो हम हैं जो संभालें हैं गिरती दीवारों को
सलीक़े से बुज़ुर्गों की निशानी को कौन रखता है

-मुनव्वर राना

दिल को बहलाने का सामान ना समझा जाए
मुझको अब इतना भी आसान ना समझा जाए
अब तो बेटे भी हो जाते हैं घर से रुख़सत
सिर्फ़ बेटी को ही मेहमान न समझा जाए

-रेहाना रूही

जाने कितनी उड़ान बाक़ी है
इस परिन्दे में जान बाक़ी है
जितनी बँटनी थी बँट चुकी ये ज़मीं
अब तो बस आसमान बाक़ी है

-राजेश रेड्डी

करें ख़ुद नाज़ जिन पे सारा ये संसार बेटे दे
जो माहिर हो बड़े फ़न में वो फ़नकार बेटे दे
मेरे मौला मेरी बस एक ही दरख़्वास्त है तुझसे
जो लंबी उम्र देना हो तो ख़िदमतगार बेटे दे

-सूफ़ियान क़ाज़ी

सिर्फ़ ख़ंजर ही नहीं, आँखों में भी पानी चाहिए
ऐ ख़ुदा दुश्मन भी मुझे ख़ानदानी चाहिए
मैंने अपनी ख़ुश्क आँखों से लहू टपका दिया
एक समंदर कह रहा था मुझको पानी चाहिए

- राहत इन्दौरी

मेरी निगाह में वो शख़्स आदमी भी नहीं
लगा है जिसको ज़माना ख़ुदा बनाने में
लगे थे ज़िद पे कि सूरज बनाके छोड़ेंगे
पसीने छूट गए इक दीया बनाने में

- राहत इन्दौरी

सपना क्या है नैन सेज पर सोया हुआ आँख का पानी
और उसका टूटना है उसका ज्यों जागे कच्ची नींद-जवानी
गीली उमर बनाने वालों, डूबे बिना नहाने वालों
कुछ पानी के बह जाने से, सावन नहीं मरा करता है

-नीरज

अजनबी पेड़ों के साये में मुहब्बत है बहुत
घर से निकले तो ये दुनिया ख़ूबसूरत है बहुत
रात तारों से उलझ सकती है, ज़र्रों से नहीं
रात को मालूम है जुगनू में हिम्मत है बहुत

-बशीर बद्र

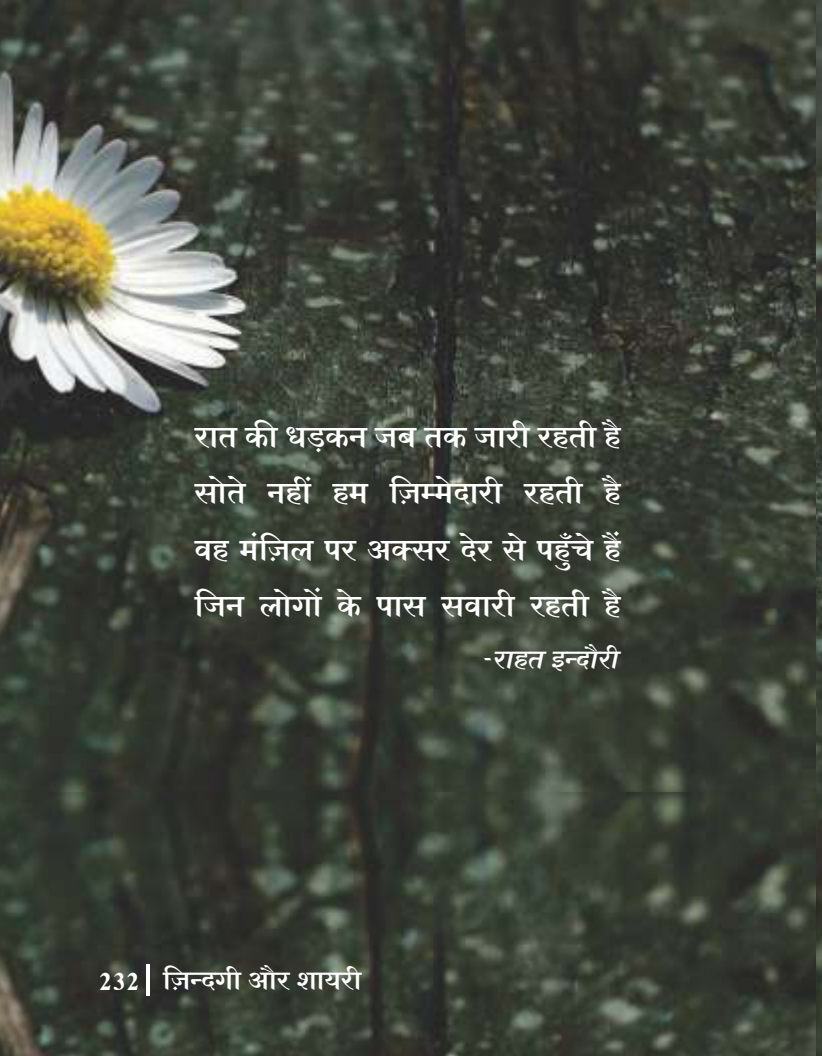

रात की धड़कन जब तक जारी रहती है
सोते नहीं हम ज़िम्मेदारी रहती है
वह मंज़िल पर अक्सर देर से पहुँचे हैं
जिन लोगों के पास सवारी रहती है

-राहत इन्दौरी

किसी का इतना ऊँचा क़द नहीं है
कोई पीपल कोई बरगद नहीं है
मुहब्बत करने वालों की हदें हैं
मुहब्बत की कोई सरहद नहीं है

-अबरार क़ाशिफ़

हालात के क़दमों पे कलंदर नहीं गिरता
टूटे भी जो तारा तो ज़मीं पर नहीं गिरता
गिरते हैं समंदर में बड़े शौक़ से दरिया
लेकिन किसी दरिया में समंदर नहीं गिरता

-क़तील शिफ़ाई

सर पे सूरज लिए खड़ा हूँ मैं
अपनी परछाई से बड़ा हूँ मैं
किसी पत्थर से टूटता भी नहीं
जाने किस फ्रेम में जड़ा हूँ मैं

-शकील आज़मी

तू सबसे पहला वार कर
धरा हिला, गगन गूंजा
नदी बहा, पवन चला
विजय तेरी, विजय तेरी
ज्योति सी जल, जला
भुजा-भुजा, फड़क-फड़क
रक्त में धड़क-धड़क
धनुष उठा, प्रहार कर
तू सबसे पहला वार कर
अग्नि सी धधक-धधक
हिरन सी सजग सजग
सिंह सी दहाड़ कर
शंख सी पुकार कर
रुके न तू, थके न तू
झुके न तू, थमे न तू
सदा चले, थके न तू
रुके न तू, झुके न तू

-डॉ. हरिवंश राय बच्चन

प्रत्येक प्रसंग के लिए
सर्वश्रेष्ठ उपहार है पुस्तक

हमारा परिवेश और जनमानस उत्सवों और मंगल प्रसंगों से लकदक रहता है। गाहे-बगाहे आपको किसी न किसी कार्यक्रम के लिए एक आकर्षक उपहार दरकार होता ही है। प्रियजनों के जन्मदिन, विवाह समारोह, विवाह वर्षगाँठ में आए गणमान्य अतिथियों को भेंट करने के लिए पुस्तक से बेहतर और कोई उपहार नहीं हो सकता। कॉर्पोरेट, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक समागमों और सम्मेलनों में भी प्रतिभागियों को विदा-भेंट के रुप में पुस्तिका का प्रचलन बढ़ता जा रहा है।

यदि आपको लगता है कि यह पुस्तक किसी शुभ अवसर या प्रियजनों के स्मृति प्रसंग पर उपहार के रूप में आप भेंट करना चाहते हैं तो हमें अवश्य संपर्क कीजिए। (ध्यान रहे ! इसके पीछे हमारा कोई व्यावसायिक हेतु नहीं है) हम चाहते हैं कि बदलते ज़माने में भी पुस्तकों का पढ़ने-पढ़ाने का सिलसिला ज़ारी रहे। प्रकाशित मूल्य में विशेष छूट के लिए कम से कम 50 प्रतियों का ऑर्डर आवश्यक होगा। हमारे अन्य लोकप्रिय प्रकाशनों की जानकारी भी इस पुस्तक में दी गई है।

Shabdawali
PRAKASHAN

हिन्दुस्तान अभिकरण

पंधाना रोड, खण्डवा (म.प्र.)
फोन : 0733-2223003, 2223004
मोबाइल : 76970-50000, 70240-50000
ईमेल : hindustanabhikaran@gmail.com

शायरी, दोस्ती और क़ामयाबी का दूसरा नाम आलोक सेठी

आलोक सेठी अब तहज़ीब पसंद शहर खण्डवा की शिनाख़्त बन गए हैं। उनकी शख़्सियत में कई रंग शामिल हैं। कविता और शायरी उनकी ज़िन्दगी का अटूट हिस्सा है वे एक क़ामयाब कारोबारी हैं। शून्य से शुरू होकर उन्होंने शिखर छू लिया है। ज़मानेभर की यात्राएँ उनके जुनून के रथ का एक घोड़ा है। ज़िंदगी की आधी सदी देख चुके आलोक को 50 से ज़्यादा मुल्कों की धूल, हवा और पानी ने हर चीज़ को बड़ा देखने और समझने का नज़रिया दिया है। मोबाइल पर उनका 'संडे का फण्डा' हज़ारों मित्रों के रविवार को ख़ुशगवार कर देता है। पढ़ना, सुनना, सुने हुए को गुनना और फिर उसे एक सलीक़े से पेश करना आलोक सेठी की फ़ितरत में शामिल है। वे बेहतरीन लेखक हैं। एक लाजवाब दोस्त हैं। कॉर्पोरेट, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मंचों पर उन्हें बोलते हुए सुनना सुखद है। उन्होंने प्रबंधन को पढ़ा नहीं, अपनी ज़िंदगी में जिया है। यक़ीनन आलोक सेठी मीठे लफ़्ज़ों से नेकियाँ बाँटने वाले बड़े आदमी हैं। उनके क़रीब होना, उन्हें जानना और उनके दोस्तो की फ़ेहरिस्त में शामिल होना; मुझे ख़ुशी से भर देता है।

मुनव्वर राना

Shabdawali PRAKASHAN

ISBN No. 9788193484944

₹200/-